अपना भविष्य बदलने के लिए, हमें बच्चों को इतिहास पढ़ाने का अपना ढंग बदलना चाहिए

युवाल नोआ हरारी

हो सकता है कि हम वयस्क उन क्षति पहुँचाने वाले किस्सों को अपने दिमाग से न निकाल सकें जो हमें सुनाए जाते रहे हैं, लेकिन हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी जारी उनके अभियान को तो रोक ही सकते हैं।

हम बच्चों को इतिहास से नहीं बचा सकते। युक्रेन में लाखों परिवारों ने व्लादीमीर पुतिन के युद्ध में अपने घर गँवा दिए हैं। दिल्ली में इस गर्मी में 50 डिग्री के रिकॉर्ड-तोड़ तापमान ने बच्चों को घरों के अन्दर बन्द कर दिया था; वे पढ़ने या खेलने की स्थिति में नहीं रह गए थे। भोजन की कीमतें वैश्विक स्तर पर आसमान छू रही हैं, जिसकी वजह से दुनिया भर के बच्चे भूख से पीड़ित हैं। इसलिए निश्चय ही अब यह अपरिहार्य है कि अगली पीढ़ी इस बड़े सवाल का सामना करना चाहती है : युद्ध क्यों हो रहे हैं? प्रकृति में हमारी जगह क्या है? पैसा क्या है और वह इतना ज़्यादा महत्वपूर्ण क्यों है?

अक्सर, बच्चे इन सवालों को वयस्कों के मुकाबले ज़्यादा गम्भीरता से लेते हैं। वे उन चीज़ों पर सवाल

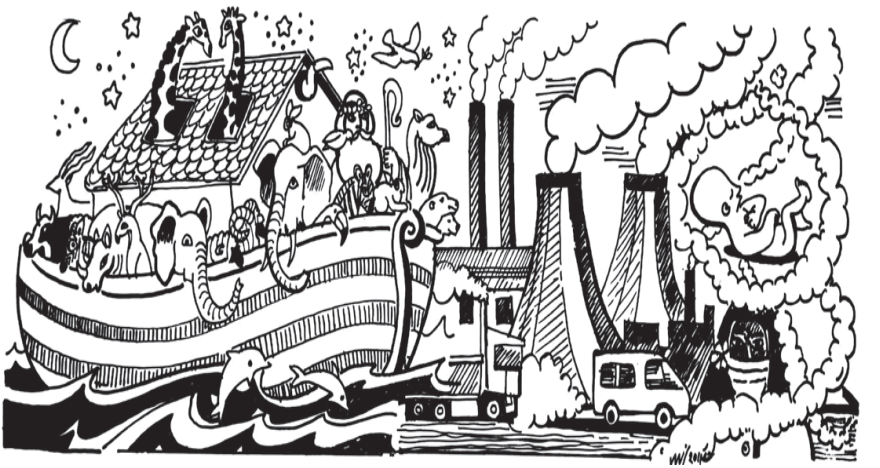

उठाते हैं जिन्हें वयस्क बहुत तरजीह नहीं देते। जब कोई बच्चा हमारे हर जवाब पर "क्यों?" कहता है, तो मुमकिन है कि वयस्कों को इस बात से खीझ होती हो। लेकिन सामान्यत: वह बच्चा कुछ इस तरह चीज़ों की तह में जाने की कोशिश कर रहा होता है जैसा वयस्क काफी पहले बन्द कर चुके हैं।

इतिहास के मिथकों के समक्ष बच्चे

जिस एक अन्य चीज़ से हम बच्चों की हिफाज़त नहीं कर सकते, वह है झूठे ऐतिहासिक आख्यानों से बच्चों का सामना। बच्चों पर बहुत कम उम्र से ही मिथकों और झूठी जानकारियों का हमला होने लगता है, सिर्फ ताज़ा घटनाओं के बारे में ही नहीं, बल्कि स्वयं मानवता के बुनियादी कथानक के बारे में – हम कौन हैं, हम कहाँ से आए हैं और हम यहाँ कैसे पहुँचे।

उदाहरण के लिए, मेरे अपने देश इज़रायल में, सेक्युलर स्कूलों के बच्चे तक, निएंडरथल्स[1] के बारे में जानने से या लासकॉक्स और सुलावेसी[2] के गुफा-चित्रों को देखने से बहुत पहले, आम तौर से 'गार्डन ऑफ ईडन' के बारे में पढ़ लेते हैं और नोआ की नौका की रंगीन तस्वीरें देख लेते हैं। इसका एक प्रभाव पड़ता है। जैनेसिस के आदेश "धरती को भर दो और उसे अपने अधीन कर लो" से लेकर औद्योगिक क्रान्ति और आज के पारिस्थितिक संकट तक एक सीधी रेखा खींची जा सकती है। प्रभाव की ऐसी एक और सीधी रेखा रूस के बच्चों द्वारा पढ़े जा रहे ऐतिहासिक आख्यानों से लेकर युक्रेन पर पुतिन के हमले और उसके नतीजे में पैदा हुए खाद्यान्न के वैश्विक संकट तक खींची जा सकती है।

अगर हम बच्चों को मिथकों के भरोसे छोड़ देते हैं, तो बाद के जीवन में इन धारणाओं को दिमाग से निकालना मुश्किल, और कभी-कभी असम्भव काम हो जाता है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम बच्चों के साथ बड़े मुद्दों पर कट्टर आस्थाओं की बजाय साक्ष्यों पर आधारित वैज्ञानिक और ज़िम्मेदाराना तरीके से खुलकर बात करें। यह वह चुनौती है जिससे मैं खुद भी बच्चों के लिए दुनिया का इतिहास लिखते समय जूझता रहा हूँ।

बच्चों के लिए इतिहास लिखना

इस लेखन से मुझे यह सीख मिली है कि बच्चों के लिए बड़े मुद्दों पर बात करना बड़ा ही नाज़ुक काम है। कुछ विषय ऐसे हैं जो मज़ेदार हैं, जैसे कि पाषाण युग के शिकारी

[1] *निएंडरथल के बारे में और जानने के लिए पढ़िए संदर्भ का अंक 141 (जुलाई-अगस्त, 2022) व 142 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)।*

[2] *लासकॉक्स फ्रांस और सुलावेसी इंडोनेशिया की गुफाएँ हैं जहाँ पुरापाषाण काल के गुफा-चित्र पाए गए हैं।*

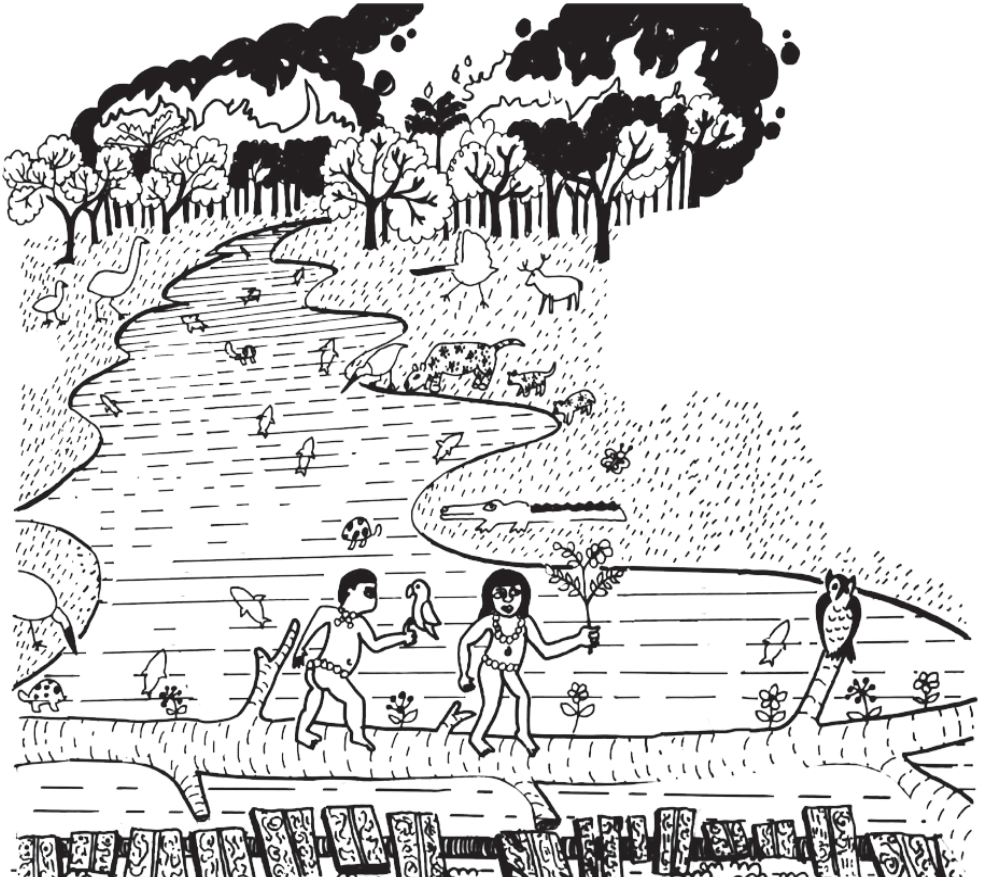

संग्रहकर्ताओं के उस रोज़मर्रा जीवन के बारे में खोजबीन करना, जब लोग जंगलों में रहते थे और बच्चे पेड़ों पर चढ़ना, जानवरों को खोजना और आग जलाना सीखते हुए अपना दिन गुज़ारते थे। लेकिन दूसरे विषय ज़्यादा चुनौतीपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम इस बात की जाँच करने बैठते हैं कि जब सेपियन्स निएंडरथल्स से मिले तब क्या हुआ, तो हमें इस तरह की चीज़ों पर चर्चा करनी पड़ती है कि जब किसी बच्चे की माँ सेपियन्स और पिता निएंडरथल रहा होगा तब उस बच्चे का जीवन किस तरह का रहा होगा। यह चर्चा नस्लवाद, युद्ध, सामूहिक जनसंहार और प्रजातियों के लुप्त होने जैसे मसलों की ओर ले जाती है।

इतिहास के इन स्याह पक्षों के बारे में बात करना बहुत ज़रूरी है, लेकिन इन सब बातों को सुनकर बच्चे आतंक के शिकार न हो जाएँ, यह कैसे सुनिश्चित किया जाए? इसका एक मार्गदर्शी सिद्धान्त तो यह है कि हम आतंक के स्पष्ट वर्णनों के लिए तब तक इन्तज़ार करें जब तक कि श्रोता इतना परिपक्व न हो जाए कि वह उसको ठीक से पचा सके। इसकी बजाय, आपदाओं और अन्यायों की चर्चा करते समय सबसे अच्छा है कि कर्तृत्व (agency) पर बल दिया जाए : स्थितियाँ कितनी ही भयावह क्यों न हों, लोग बेहतर स्थिति के लिए आम तौर पर बदलाव लाते हैं। यह इच्छित चिन्तन नहीं है, बल्कि इतिहास का सार है। आखिरकार, इतिहास अतीत का अध्ययन, या महज़ युद्धों और तबाहियों और उन मृत राजाओं की फेहरिस्त नहीं है जो हज़ारों साल पहले राज किया करते थे। इतिहास इस बात का अध्ययन है कि स्थितियाँ किस तरह बदलती हैं।

इतिहास की ताकत

अगर हम सोचते हैं कि दुनिया हमेशा से एक-जैसी रही है, और आज हम जिस तरह रहते हैं वही इन्सानों के रहने का ढंग है, तो ऐसा लगना स्वाभाविक है कि परिवर्तन असम्भव है और जिन समस्याओं का सामना हम कर रहे हैं, उनके कोई समाधान नहीं हैं। अगर हालात बहुत अन्यायपूर्ण भी हैं, तो हम क्या कर सकते हैं? दुनिया ऐसी ही है, हम खुद से कहते हैं। लेकिन इतिहास का अध्ययन करते हुए हमें पता चलता है कि इन्सान हमेशा से उसी तरह नहीं रहते आए थे जैसे हम रहते हैं, और दुनिया हर समय बदलती रही है, बदल रही है। दुनिया जैसी है, वैसा उसे लोगों ने बनाया है – और इसीलिए लोग उसे बदल सकते हैं। बेशक, यह कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यह पहले कई-कई बार किया जा चुका है।

यही वजह है कि इतिहास इतना शक्तिशाली है। वह दुनिया को बदलने की कुंजी है। इस कदर कि कई जगहों पर सरकारें इतिहास से डरती हैं। नेतागण शायद ही कभी लोगों को गणित या भैतिकी पढ़ने पर रोक लगाते हैं। लेकिन बहुत-सी सरकारें लोगों को – और विशेष रूप से नौजवानों को – इतिहास के कम-से-कम कुछ हिस्से पढ़ने से रोकती हैं। यह सब उन पुराने राजाओं के ज़माने से जारी रहा है जिन्होंने हज़ारों साल पहले राज किया था, उनके बर्फीले हाथ कब्रों से बाहर आकर हमारे दिमागों को जकड़ते हैं और परिवर्तन पर रोक लगा देते हैं।

आखिरकार, यह बहुत पहले मर चुके वही राजा थे जिन्होंने देवताओं, राष्ट्रों, पैसा और प्रेम के बारे में विभिन्न किस्म के किस्से गढ़े थे और उनका प्रचार-प्रसार किया था, जिनमें आज

भी बहुत-से लोग विश्वास करते हैं और उनसे चिपके रहते हैं। इन आख्यानों से कुछ आज़ादी हासिल करने के लिए और भिन्न तरह से आचरण करने के लिए हमें यह समझना ज़रूरी है कि वे किस्से किस तरह गढ़े और प्रचारित-प्रसारित किए गए थे। अगर हम यह नहीं करेंगे तो उनकी इस असलियत को कभी नहीं समझ पाएँगे कि वे महज़ किस्से हैं। बच्चों के द्वारा 'क्यों?' पूछा जाना वह सशक्त बल है जो इन पुराने किस्सों की नींव हिला सकता है।

अपना बोझ बच्चों पर ढोना?

लेकिन आतंक को टालने के अलावा, हमें इस बात को लेकर भी सावधान रहना चाहिए कि हम बच्चों पर अपनी ज़िम्मेदारियों का बोझ डालने से बचें। बच्चों से यह अपेक्षा करना कि वे हमारी योजनाओं पर अमल करें, और खास तौर से यह कि वे उन समस्याओं को हल करें जिन्हें हम हल करना चाहते हैं, वयस्कों की नियम-पुस्तिका का सबसे पुराना पाप है। बच्चों से बड़े मुद्दों पर बात करते समय, हमें जब-तब खुद से यह पूछते रहना चाहिए कि हम वैसा क्यों कर रहे हैं।

दुनिया का हर व्यक्ति एक भारी बोझ उठाए हुए है। जब हम नौजवानों को इतिहास पढ़ाते हैं, तो कभी-कभी हम अपना बोझ अगली पीढ़ी के कन्धों पर डालने के लिए वैसा करते हैं। हम चाहते हैं कि युवा लोग उन विश्वासों, स्मृतियों, पहचानों और टकरावों को ढोएँ जिनका बोझ हम अपनी पूरी ज़िन्दगी ढोते रहे हैं।

"देखो, बच्चो, यहाँ तक इन चीज़ों को मैं ढोता रहा हूँ – अब तुम्हारी बारी है!"

यह नाजायज़ है। इतिहास पढ़ाने की एक बेहतर वजह बच्चों को कम-से-कम उनके कुछ डरों, भ्रमों और नफरतों से मुक्त करना है। "इन चीज़ों को देख रहे हो, बच्चे? मैं इनमें वर्षों से फँसा रहा हूँ और इन्होंने मुझे दयनीय हालत में ला छोड़ा है। ध्यान रहे, तुम भी इनमें मत उलझ जाना!"

मुक्ति

मैं उम्मीद करता हूँ कि इतिहास लोगों को बन्धन में डालने की बजाय उन्हें मुक्त करने का साधन बनेगा। ऐसा साधन जो पुराने टकरावों को चिरस्थायी बनाए रखने की बजाय नए सामंजस्यों को गढ़ने में मदद करे। आखिर, इतिहास पढ़ने की सार्थकता अतीत को याद करने में नहीं है, बल्कि उससे मुक्ति पाने में है।

युवाल नोआ हरारी: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इतिहास में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है और अब विश्व इतिहास में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद वे हिब्रू विश्वविद्यालय, येरुस्लम में अध्यापन करते हैं। उनकी दो पुस्तकें *सेपियन्स: अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ह्यूमनकाइंड* और *होमो डेयस: अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टुमॉरो* अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो चुकी हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: मदन सोनी: आलोचना के क्षेत्र में सक्रिय वरिष्ठ हिन्दी लेखक व अनुवादक। इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। इन्होंने उम्बर्तो एको के उपन्यास *द नेम ऑफ दि रोज़*, डैन ब्राउन के उपन्यास *दि द विंची कोड* और युवाल नोआ हरारी की किताब *सेपियन्स: अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ह्यूमनकाइंड* समेत अनेक पुस्तकों के अनुवाद किए हैं।

सभी चित्र: शैलेश गुप्ता: आर्किटेक्ट और चित्रकार जो आज भी बचपन को संजोए रखना चाहते हैं। एमआईटीएस, ग्वालियर से आर्किटेक्चर की पढ़ाई। कहानियाँ सुनने और सुनाने का शौक है। भोपाल में रहते हैं।

यह लेख *द गार्डीयन* पत्रिका के अंक - 18 अक्टूबर, 2022 से साभार।